गडकरी क्या भाजपा को वैतरणी पार करायेंगे?

आखिर नितिन गडकरी को भारतीय जनता पार्टी का अध्यक्ष बना ही दिया गया। इस बात की चर्चा पहले से थी कि इस बार संघ भाजपा अध्यक्ष का चुनाव करेगा। वैसे तो भाजपा का अध्यक्ष कोई तभी बन सकता है जब उसे संघ का आशीर्वाद प्राप्त हो, पर इस पर संघ द्वारा एक झीना-सा ही सही, आवरण डाला जाता था। संघ के प्रतिनिधि कहा करते थे कि अध्यक्ष का चुनाव करना भाजपा का आंतरिक मामला है और इससे संघ को कोई लेना-देना नहीं है। पर दरअसल बात ऐसी होती नहीं थी। संघ की मर्जी के बिना भाजपा में पत्ता भी नहीं डोल सकता।

यह तभी स्पष्ट हो गया था जब जिन्ना संबंधी बयान देने के कारण आडवाणी की पहले तो खूब लानत-मलामत की गई और फ़िर उनसे अध्यक्ष पद छीन लिया गया। उस समय संघ की पसंद राजनाथ सिंह बने। पर राजनाथ सिंह संघ की आशाओं पर खरे नहीं उतर पाये। उनके दौर में भाजपा कोई खास उपलब्धि हासिल नहीं कर पाई। उपलब्धियों की बात छोड़ें भी तो राजनाथ के कार्यकाल के दौरान भाजपा में गुटबंदी जोरों से बढ़ी और अंतर्कलह अपने चरम पर पहुंच गया। गुटबंदी इतनी बढ़ी कि आडवाणी जैसा नेता भी इस माहौल में घुटन महसूस करने लगा। कई बार ऐसी भी चर्चा चली कि अध्यक्ष का चुनाव होने के बाद आडवाणी राजनीति से संन्यास लेकर घर बैठेंगे। पर अध्यक्ष के चुनाव के साथ जहां सुषमा स्वराज को लोकसभा संसदीय दल का नेता और अरुण जेटली को राज्य सभा संसदीय दल का नेता बनाया गया, वहीं आडवाणी को संयुक्त रूप से संसदीय दल का नेता बनाया गया है। इस मौके पर आडवाणी ने साफ़-साफ़ कहा है कि वे मरते दम तक राजनीति नहीं छोड़ेंगे। कहा जा सकता है कि अटलबिहारी वाजपेयी के बाद पुरानी पीढ़ी के नेताओं में सिर्फ़ आडवाणी ही बच गये हैं जिनकी उपेक्षा संघ नेतृत्व चाह कर भी नहीं कर सकता। आडवाणी भाजपा के प्रखर नेताओं में सर्वोच्च रहे हैं और आज भी जब लिब्रहान आयोग की रिपोर्ट आ गई है, इनकी प्रखरता में कोई कमी दिखाई नहीं पड़ती। अटल के बाद भाजपा में तथाकथित 'उदार हिंदूवाद' का चोला आडवाणी ने ही पहन रखा है और ऐसा इसलिए कि भाजपा के साथ गठबंधन बनाने में 'धर्मनिरपेक्ष' कहे जाने वाले दलों को कोई असुविधा नहीं हो।

एक समय था जब राममंदिर आंदोलन के दौरान अटलबिहारी वाजपेयी उदार हिंदूवाद का मुखौटा लगाये हुए थे और इस सच को साफ़-साफ़ कह देने पर हिंदूवाद के सिद्धांतकार संघ प्रचारक गोविंदाचार्य को वनवास दे दिया गया था, आडवाणी कट्टर हिंदूवाद के प्रतिनिधि के रूप में सामने आते थे। भूलना नहीं होगा कि उन्होंने रथयात्रा कर पूरे देश में हिंदूवाद की लहर को पैदा करने की कोशिश की थी, बजरंग दल जैसे आततायी संगठन को खड़ा किया था जिसने आगे चल कर राम के नाम पर भयंकर लूटपाट के साथ सांप्रदायिक दंगों को भी फैलाने का काम किया। यह भी नहीं भूला जा सकता कि संघ, विश्व हिंदू परिषद् और बजरंगियों के साथ अयोध्या में एक मंच पर बैठ कर आडवाणी ने ऐसे हालात बनाने में विशेष भूमिका निभाई कि उन्मादी भीड़ ने बाबरी मस्जिद का ध्वंस कर दिया। लिब्रहान आयोग ने ठीक ही बाबरी मस्जिद ध्वंस के लिए इन्हें जिम्मेवार माना है, पर इस ध्वंस के दोषियों को वर्तमान सरकार सजा दे पाने में समर्थ नहीं है, क्योंकि यह स्वयं ही अनेकानेक समस्याओं से घिरी हुई है और इसकी नाव डगमगाती हुई चल रही है। बहरहाल, भाजपा सत्ता में कैसे आ सकती है, इसका ब्लूप्रिंट आडवाणी ने तैयार किया और दो बार सत्ता तक पहुंचाने वाली सीढ़ियों पर लुढ़क जाने के बाद तीसरी बार सत्ता तक पहुंच जाने में कामयाब हो गये। इसके बाद राममंदिर का निर्माण, धारा-370 और समान दंड संहिता आदि बातें ये भूल गये। फ़िर तो जो साधु-संन्यासी इनके समर्थक थे, वे ही इन्हें कोसने लगे, क्योंकि राममंदिर निर्माण की दिशा में कुछ भी करने से इन्होंने इन्कार कर दिया। पर भाजपा के केंद्रीय सत्ता में आ जाने से संघ फूले नहीं समा रहा था। जिस चीज के लिए वह बरसों से आशान्वित था, वह चीज उसे मिल गई थी, पर गठबंधन राजनीति के तहत। ऐसे में भाजपा मनचाहा काम नहीं कर सकती थी, पर इतना तो तय है कि गठबंधन में वह 'बड़े भाई' की भूमिका में थी। भाजपा सत्ता में आये, इसके लिए सारा कुचक्र आडवाणी और उनके चुनिंदा सहयोगियों ने रचा था और इसमें वे पूरी तरह सफ़ल भी रहे।

गडकरी अपेक्षाकृत युवा नेता हैं। आडवाणी यद्यपि वृद्ध हो गये हैं, पर उन्होंने उम्र को अपने ऊपर हावी होने नहीं दिया है। संभवतः वे एक पारी और खेल सकते हैं।

पर कबीर हांडी काठ की चढ़े न दूजे बार।

पांच वर्ष किसी तरह सत्ता की नाव खेने के बाद भाजपा इस हालत में नहीं रह गई कि दुबारा केंद्रीय सत्ता पर अपना कब्जा जमा सके। इसके लिए न जाने कितने जतन किये गये। हाईटेक तरीके से प्रचार किया गया। 'इंडिया शाइनिंग' का नारा उछाला गया। पर यह सब बेकार साबित हुआ। भाजपा जीत का मुंह नहीं देख सकी। फ़िर पांच साल इंतज़ार। इस बीच भारी गुटबंदी और उठापटक जारी रही। आडवाणी ने जानबूझ कर प्रधानमंत्री पद का प्रत्याशी बनने के लिए अपने आप को उदारवादी साबित कर पायें, इसके लिए पाकिस्तान में जिन्ना की मजार पर फूल चढ़ा कर उनकी स्तुति कर डाली। इससे सत्ता नहीं मिलने से असंतुष्ट संघ नेतृत्व ने उन पर प्रहार करना शुरू कर दिया। यह जिन्ना की प्रशंसा करने का ही परिणाम था कि आडवाणी को अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा। लेकिन आडवाणी ने अपनी छवि ऐसी बना रखी थी कि इसका कोई असर नहीं हुआ। संघ नेताओं को भी खरी-खरी सुनाने से वे बाज नहीं आये। इसके अलावा जब चुनाव की रणभेरी बजी तो इन्होंने अपने आप को 'प्राइम मिनिस्टर इन वेटिंग' घोषित करवा लिया। अब एक समय के कट्टर छवि वाले आडवाणी ने उदारवादी चोला पहन लिया था और कट्टर हिंदुत्व का मुखौटा गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को दे दिया था। इस बीच राजग बिखर चुका था। भाजपा से ही बहुत सारे नेता बगावत कर निकल चुके थे। आडवाणी समर्थक और आडवाणी विरोधी गुट का संघर्ष अपने चरम पर पहुंच गया था। भाजपा की फ़िर पराजय ने मानो आडवाणी को प्रभाहीन कर दिया था और 'प्राइम मिनिस्टर इन वेटिंग' का पुच्छला उन्हें शर्मसार करने वाला हो कर रह गया था। फ़िर सवाल आया अध्यक्ष के चुनाव का। संघ नेताओं के सामने यह स्पष्ट था कि आडवाणी अध्यक्ष पद के लिए अपने आप को हनुमान घोषित कर चुके वेंकैया नायडू के नाम की संस्तुति करेंगे। सुषमा स्वराज और अरुण जेटली का नाम भी काफ़ी उछल रहा था, पर उछल कर ही रह गया, क्योंकि संघ प्रमुख मोहन भागवत ने नितिन गडकरी के नाम को प्रस्तुत कर दिया। गडकरी को महाराष्ट्र से बाहर बहुत ही कम लोग़ जानते हैं। पर अब अध्यक्ष बन जाने पर स्वयं लोग़ जानने लगेंगे। अभी तक तो लोगों ने उनकी वाणी भी नहीं सुनी है। पर इतना तो स्पष्ट है कि वे संघ के खास आदमी हैं और उनके माध्यम से संघ भाजपा को जिस दिशा में चाहे, मोड़ सकता है। यह भी स्पष्ट है कि अब संघ और भाजपा नेतृत्व के बीच किसी तरह संवादहीनता नहीं रह जायेगी, जैसा कि आडवाणी के अध्यक्ष रहते हो गई थी।

पर सब कुछ निर्भर करता नेता की चुनाव जिताने की क्षमता पर। पहले के मुकाबले अब भाजपा इसलिए कमज़ोर नज़र आ रही है, क्योंकि इक्का-दुक्का राज्यों को छोड़ कर इसकी सरकार और कहीं नहीं है। लोकसभा चुनाव में पराजित होने के कारण नेता और कार्यकर्ता उत्साहित नहीं हैं। अगला लोकसभा चुनाव अभी बहुत दूर है। ऐसा भी नहीं लगता कि कांग्रेस गठबंधन की सरकार बीच में ही लड़खड़ा जायेगी। यह सरकार अपनी पूरी अवधि तक चलेगी। देखना यह है कि भाजपा में कितना धैर्य है। गडकरी अपेक्षाकृत युवा नेता हैं। आडवाणी यद्यपि वृद्ध हो गये हैं, पर उन्होंने उम्र को अपने ऊपर हावी होने नहीं दिया है। संभवतः वे एक पारी और खेल सकते हैं। पर पांच वर्ष के बाद एक और पारी खेलने के लिए गडकरी भाजपा को किस हद तक तैयार कर पाते हैं, देखना यही है।

■ मनोज कुमार झा

व्यंग्य

राम सिंह की ट्रेनिंग

■ हरिशंकर परसाई

राम सिंह रोज़ शाम को मेरे घर आता है और मुझे सामने बिठा कर एक घंटे गालियां देता है।

पड़ोसी पूछते हैं-क्या यह पागल हो गया है?

मैं कहता हूं-नहीं।

तब वे मुझे प्रोत्साहित करते हैं कि या तो मैं उसे पीटूं या उन्हें उसे पीट कर पड़ोसी का कर्तव्य निभाने दूं।

मैं हंस देता हूं।

अब वे मुझे कायर या पागल समझने की तैयारी में हैं।

राम सिंह सिर्फ़ गालियां ही नहीं देता।

एक रात को वह मेरे घर में गांजे की दो-चार कलियां डाल गया। सुबह आ कर उसने घर की तलाशी ली और रुमाल से मेरे हाथ बांध कर मुझे गिरफ़्तार कर लिया।

राम सिंह मुझे छोटे भाई की तरह प्यारा है। मुझे यह देख कर खुशी होती कि राम सिंह बड़ी तेज़ी से योग्य होता जा रहा है और नौकरी में तरक्की करता जायेगा।

आठ-दस दिन पहले की बात है। राम सिंह के बड़े भाई हनुमान सिंह बड़े परेशान-से मेरे पास आये। कहने लगे-तुम्हें मालूम है, राम सिंह छुट्टी पर आया है। वह इंस्पेक्टर क्या हो गया है, पागल हो गया है। उसने घर सिर पर उठा रखा है। कमरे को बंद कर लेता है और घंटों गालियां बकता रहता है। एक दिन मैंने खिड़की के सुराख में से देखा कि हमारे बाप-दादों और नेताओं के जो चित्र दीवारों पर टंगे हैं, उन्हें वह गाली दे रहा है। एक दिन मैं मुन्ने से पढ़ने के लिए बैठने को कह कर बाहर चला गया। लौट कर आया तो बड़ी लड़की ने कहा-'राम सिंह चाचा का क्या दिमाग फ़िर गया है? आपके जाने के बाद मुन्ना उठ कर खेलने चला गया। जब लौटा तो राम सिंह चाचा उसे क्या कहते हैं - ऐ मुन्ने, इकन्नी दे, नहीं तो बड़े भैया से रिपोर्ट करके तुझे पिटवाऊंगा। हमने हंसी-हंसी में मुन्ने को इकन्नी देकर कहा कि चाचा जी को दे दे। हे भगवान उन्होंने इकन्नी लेकर जेब में रख ली।' अजीब हरकतें करता है। बच्चों से पानी मांगता है और अगर देर हो जाये तो चिल्लाता है-जल्दी पानी ला। क्या समझता है? सात साल के लिए भेज दूंगा। यार, मेरी नाक में तो दम है। क्या करूं? उससे पूछता हूं तो वह हंस कर कह देता है - आगे चल कर समझोगे। अभी मत बोलो। भई, मेरा तो विश्वास है कि उसका दिमाग़ फ़िर गया है।

राम सिंह को मैं बचपन से जानता हूं। बड़ा सुशील, ईमानदार और नम्र लड़का था।

दूसरे दिन मैं उससे मिला।

मैंने कहा-यह मामला क्या है?

उसने कहा-मालूम होता है, बड़े भैया ने आपसे शिकायत कर दी है। मुझे कोई समझने की कोशिश नहीं करता। मैं कहता हूं, एक महीना मुझसे कोई मत बोलो। मेरा दिमाग़ बिलकुल ठीक है। मैं पागल नहीं हूं।

"बूढ़े ने जेब से कुछ नोट निकाले और मेरी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा-हुजूर, ग़लती हमसे ज़रूर हुई है, पर लड़का नादान है। मैं होता तो कभी रिपोर्ट नहीं होती। मैं जानता हूं कि आपको तकलीफ़ होती है और काम में हर्ज़ होता है। यह भी जानता हूं कि इसका हर्ज़ाना देना पड़ता है। सो ये पचास रुपये आप लीजिए और लड़के को माफ़ कर दीजिए। आइंदा कभी भूल नहीं होगी।"

मैंने कहा-फ़िर तुम यह सब क्यों करते हो?

उसने जो क़िस्सा बयान किया, यह उसी के शब्दों में यों है-

भाई साहब, मैं नया-नया इंस्पेक्टर हुआ था। मेरे मन में बड़े ऊंचे आदर्श और सेवा-भावना थी। एक दिन पास के गांव का एक लड़का आया और रिपोर्ट की कि हमारे घर में चोरी हो गई। मैं फ़ौरन तहक़ीक़ात करने पहुंच गया।

उस घर के आंगन में एक बूढ़ा सिर झुकाये बैठा था। मुझे देख कर उठ बैठा और घबराते हुए बोला-पधारिये, साहब। मैं खाट पर बैठ गया और पूछताछ करने लगा।

मैंने पूछा-बाबा, आपके ही घर में चोरी हुई है?

वह चुप खड़ा रहा।

मैंने फ़िर पूछा-बाबा, चोरी आपके ही घर में हुई है?

उसने कहा-क्या हुजूर मुझसे पूछ रहे है?

मैंने कहा-हां-हां, बाबा, आपसे ही।

बूढ़ा बोला-मगर साहब, मेरा नाम तो 'ऐ साले बुड्ढे' है। बाबा तो मैं नहीं हूं। मैं बूढ़े की बात समझ नहीं सका। जल्दी करने के लिए मैंने कहा-अच्छा, चोरी कब हुई?

बूढ़ा फ़िर चुप हो गया। मैंने फ़िर पूछा। तब वह हाथ जोड़ कर बोला-हुजूर, ग़लती तो हमसे हो गई। लड़का नादान है। मैं बाहर गया हुआ था। मैं होता तो हरगिज़ रिपोर्ट नहीं होती और न आपको तकलीफ़ होती। लड़के की ग़लती आप माफ़ कर दें।

मैं बड़ी हैरत में पड़ा। आख़िर यह कह क्या रहा है?

मैंने कहा-आप अजब बात कह रहे हैं। चोरी की रिपोर्ट करनी ही चाहिए। आख़िर हम किसलिए हैं? हमारा फ़र्ज है कि हम चोरी का पता लगाएं और आपका माल वापस दिलवाएं। हां, मुझे बताइए कि चोरी कब हुई और कौन-कौन चीज़ गई?

बूढ़ा फ़िर मौन हो गया। वहां खड़े हुए लोगों की तरफ़ वह किसी अर्थ से देखता खड़ा रहा।

उसका लड़का दूध का गिलास भर लाया और देने लगा। मैंने इनकार किया तो बूढ़ा बोला-ले लीजिए, साहब।

मैंने कहा-नहीं मैं अपनी ड्यूटी कर रहा हूं। मैं इस वक़्त आपकी कोई चीज़ नहीं लूंगा- सुपारी का टुकड़ा तक नहीं।

मैंने देखा कि वहां खड़े लोग़ों ने आपस में बड़े रहस्यात्मक ढंग से देखा और आंखों से कुछ इशारे भी किये।

मेरी हर बात पर वे लोग़ चौंक पड़ते और इशारे और कानाफूसी करने लगते।

मैंने बूढ़े से कहा-बाबा, तुम भी खाट पर बैठ जाओ। सयाने आदमी हो। खड़े क्यों हो?

बूढ़ा डर कर दो क़दम पीछे हट गया। उसने आस-पास खड़े लोग़ों के कान में कुछ कहा।

मैं परेशान था कि लोग़ आख़िर इतने भौंचक्के से क्यों हैं? ये बातों का जवाब नहीं देते और न जाने क्या कानाफ़ूसी करते हैं।

बूढ़े ने जेब से कुछ नोट निकाले और मेरी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा-हुजूर, ग़लती हमसे ज़रूर हुई है, पर लड़का नादान है। मैं होता तो कभी रिपोर्ट नहीं होती। मैं जानता हूं कि आपको तकलीफ़ होती है और काम में हर्ज़ होता है। यह भी जानता हूं कि इसका हर्ज़ाना देना पड़ता है। सो ये पचास रुपये आप लीजिए और लड़के को माफ़ कर दीजिए। आइंदा कभी भूल नहीं होगी।

मैं थोड़ी देर के लिए हतप्रभ हो गया। फ़िर कहा-देखिये, आपकी बातें मेरी समझ में बिलकुल नहीं आतीं।

- शेष पेज 8 पर